भीष्म साहनी के उपन्यासों में 'तमस' उपन्यास का वैशिष्ट्य

डॉ0 आमोद कुमार

हिन्दी की कतिपय विधाओं पर अपनी तूलिका चलानेवाले, मार्क्सवादी विचारधारा के लेखक भीष्म साहनी के सभी उपन्यासों की अपनी भिन्न–भिन्न विशेषताएँ हैं, मगर 'तमस' उपन्यास अपने वैशिष्ट्य के कारण बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सन् 1973 ई0 में जब इस उपन्यास का प्रथम संस्करण निकला तो हिन्दी–साहित्य–जगत में एक अजब–सी हलचल मच गयी।

स्वातंत्रता–प्राप्ति के पश्चात् भी भारत 'अँधेरे' में रहा और आज भी है। ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है कि इस देश में साम्प्रदायिकता का तमस आज भी व्याप्त है। भीष्म साहनी लिखित 'तमस' उपन्यास का अपना अलग ही वैशिष्ट्य है। उपन्यास–कला की दृष्टि से यह एक सफल उपन्यास है।

समय–विस्तार की दृष्टि से इस उपन्यास में मात्र पाँच दिनों की ही कथा कही गयी है, मगर सच तो यह है कि यह कथा केवल पाँच दिनों की ही नहीं, अपितु इक्कीसवीं सदी के हिन्दुस्तान के अबतक की लगभग सौ वर्षों की कथा हो सकती है। कहना न होगा कि 'यह उपन्यास जाति–प्रेम, धर्म, संस्कृति, परम्परा, इतिहास और राजनीति जैसी संकल्पनाओं की आड़ में शिकार खेलनेवाली शक्तियों के दुःसाहस भरे जोखिमों को खुले तौर पर प्रस्तुत करता है।